हरियाणा का लोक जीवन एवं सांस्कृति

कविता
एम.फिल. छात्रा (इहिास)
कुरूक्षेत्रा यूनिवर्सिटी, कुरूक्षेत्रा

हरियाणा की ऐतिहासिकता ईक्षणोपरान्त इसके नामकरण के प्रति जिज्ञासा होती है। जो स्वाभाविक एवं सन्दर्भ–सम्पृक्त है कि 'हरयाणा', 'हरियाना;' को लेकर विभिन्न विद्वान एकमत नहीं है जिसका शमन अभी तक नही हो पाया है इसके अतिरिक्त 'हरियाना', 'हरिक्षाणक', 'बधुधान्यक', हरिधान्यक, आदि नाम मिलते है।[1]

हरियाणा के नामकरण में सभी विद्वान एकमत नहीं है। श्री गिरिशचन्द्र अवस्थी ऋग्वेद में आए शब्द हरयाणा के आधार पर 'हरियाणा' शब्द की उत्पत्ति मानते है।[2] आचार्य भगवान देव जी हरियाणा के शिव सम्बन्धों आलयों, मेले एवं सिक्को को आधार मानकर कहते है कि इस प्रान्त के निवासियों का शिवाजी महाराज के प्रति प्रेम पाया गया है।

उत्खन्नों से प्राप्त सामग्री से भी सिद्ध होता है कि शिवाजी के प्रसिद्ध नाम 'हर' के कारण ही इस प्रदेश का नाम हरियाणा पड़ा। किसी भी प्रदेश व समाज की सांस्कृति के स्वरूप तथा प्राकृति जानने में सर्वप्रथम वहा के भौगोलिक परिवेश आवश्यक है। हरियाणा स्वतन्त्रता की सीमाएं। नवम्बर 1966 को बना किन्तु सामाजिक व सांस्कृति अध्ययन के लिए यथेष्ठ नहीं माना जा सकता।

सांस्कृति की एक प्राचीन युक्ति के अनुसार किसी देश के अभाव समाज विभिन्न जीवन–व्यापारों सामाजिक संबन्धों एवं मानवीय दृष्टि से छोआ होते हुए भी भारतीय इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। भारतीय सांस्कृति के प्रथम अंकुर इसी प्रदेश प्रस्फुटित हुए है। यहां ब्रहम ज्ञानियों के प्रयत्नों से भारतीय सांस्कृति फली–फुली और अधिक प्रचलित हुई।[3]

प्रसिद्ध लेखक उद्यभान हसं ने अपनी हरियाणा गौरव गाथा में लिखा है। हरियाणा का जीन जीवन धर्म–कर्म लोक परम्पराओं सांस्कृति एवं परिश्रम का अद्वितीय समन्वय हैं। हरियाणा प्रदेश के लोग धरती परिश्रम संतान की भांति कर्म ग्रन्थ पर अग्रसर हुई। प्राचीन रीति–रिवाजों पर्व–त्यौहारों एवं नृत्यों गीतों में भाग लेकर जीवन का भरपूर आनन्द लेते हैं।[4] हरियाणा प्रदेश एक कृषि प्रधान देश है। यहां के लोक जीवन से स्पष्ट रूप देखने को मिलता हैं। हरियाणा के लोगों का रहन–सहन अत्यन्त सरल एवं साधारण है।

हरियाणा प्रदेश में रीति–रिवाजों शब्द अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके नगरों में रहने वाले शिक्षित अशिक्षित लोगों से लेकर गांवों में रहने वाले साधारण स्त्री पुरूषों तक सभी लोग अपनी बोलचाल के व्यवहार में लाते है। हरियाणा का रहन–सहन, खान–पान धार्मिक जीवन, सांस्कृति आदि का बोलवाला है। अनेक प्रकार के संस्कार प्रचलित है जैसे जन्म, विवाह और मृत्यु संस्कार प्रचलित हैं।[5]

किसी भी देश तथा प्रदेश के पर्व त्यौहारों मेलों वहां के जीवन के रूप में देश की आत्मा बोलती है। जैसे विभिन्न त्यौहार होली, दीवाली, शिवरात्री, तीज, रक्षा–बन्धन, भैयादूज आदि त्यौहार मनाए जाते है।

प्राचीन काल में ही स्त्रियों पुरूषों की वेशभूषा का वर्णन किया गया है। हरियाणा में पुरूष परिधान के लिए पगड़ी, कुर्ता, धोती, जुती आदि पहनते है। स्त्रियों द्वारा धारण किए जाने वाले परिधान ओढ़नी, घाघरा, कुर्ता, अंगी धारण किया जाता है।[6]

हरियाणा में स्त्रियां एवं पुरूष दोनों आभूषण पहनने के शैकीन थे। स्त्रियां जिन अंगों में आभूषण धारण करती थी जैसे नथ, मुरली, छल्ला, पांजेब, माला, चुढ़ी, हसली, लाबीज, बिछुआ, हारफुल, अंगूठी, बाजुबन्ध कडूला, बाली, झूमका आदि आभूषण पहने जाते थे।

खान–पान की दृष्टि से हरियाणा में दूध, दही, घी का प्रयोग किया जाता था। हरियाणा के लोगों के द्वारा विशेष त्यौहारों के अवसर पर मीठे पदार्थ भी बनाये जाते थे जैसे हलवा, खीर, बुरा आदि खाया जाता था।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि हरियाणा का लोक जीवन एवं सांस्कृति का विशेष महत्व है जिससे हमें हरियाणा की सांस्कृति का पता चलता है किस प्रकार लोगो का रहन–सहन, रीति रिवाजो, पर्दो, त्यौहारों, पहनावा, आभूषण, खान–पान कला एवम् सांस्कृति की जानकारी

मिलती है तथा हरियाणा के कुछ मेले ऐसे हैं जिनकी यश और कीर्ति देश भर में फैली हुई है जैसे कुरूक्षेत्र में सूर्य ग्रहण का मेला, गीता जयन्ती जगाधरी में पूर्णिमा को कपाल मोचन का मेला आदि के द्वारा सामूहिक भावना और राष्ट्रीयता चेतना को बल मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. डॉ. शिवप्रकाश गोयल – हरियाणा का साहित्य, 1958
2. देवी शंकर प्रभाकर – हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, 1965
3. डॉ. पूर्णचन्द्र शर्मा – हरियाणा की लोक धर्मी नाट्य–परम्परा, 1955
4. बलदेव सिंह – हरियाणा के लोक–तीज त्यौहार, 1972
5. रामकुमार भारद्वाज – आध्यात्मिक और हरियाणा संस्कृति बोध, 1995